चतुर्थ अध्याय

मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन की समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय

"मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन की समस्याएँ"

4.1. प्रस्तावना :

मनुष्य समाजशील प्राणी है | मानव की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामाजिक व्यवस्था का निर्माण हुआ है | मनुष्य सामाजिक व्यवस्था में रहकर अपना विकास करता है | मनुष्य के कारण समाज का निर्माण हुआ | धीरे-धीरे समाज ने कुछ नियम बनाए, जिसका प्रयोग मानव करने लगा | अज्ञानी, अशिक्षित लोगों ने इसी सामाजिक पहलुओं को अधिक महत्व दिया | परिणामत: अंधश्रद्धा का निर्माण हुआ | नवाबसाहब, जमींदार, जागिरदार तथा धार्मिक व्यक्तियों के हाथ में सत्ता रहने के कारण अनपढ़ तथा दलितों का शोषण होता रहा | इस समाज व्यवस्था पर वर्णव्यवस्था हावी हो गयी थी | परिणामत: छुआछूत की समस्या निर्माण हुई | दलितों को धार्मिक, सामाजिक, राजकीय अधिकारों से वंचित रखा गया था | धीरे-धीरे जातीयता की निर्मिती हो गयी थी | भारत में जातियता इतनी मजबूत हो गई कि लोग एक-दूसरे को जाति के नाम से ही पहचानने लगे | इससे अनेक समस्याओं का निर्माण हुआ |

प्राचीन काल से आज तक दलितों के जीवन में विभिन्न समस्याएँ रही हैं इसमें से कई समस्याएँ हल हो चुकी है तो कई ज्यों की त्यों बनी रही हैं | इसके पीछे उनका अंधविश्वास, उनकी धार्मिक भावनाएँ, नये विचारों का अभाव, भौतिक सुविधा और ज्ञान का अभाव आदि कारण है | आज दलितों में संघर्ष की भावना पनपने लगी है | इसके परिणामस्वरूप इन दलितों में समस्याओं ने जन्म लिया | भारतीय समाज में जातीयता एक भयावह रूप धारण कर रही है | भारतीय जनजीवन में जातीयता की पकड़ इतनी मजबूत हो गई कि दलित जातीयता के चक्रव्यूह में पिसा जा रहा है | इस कारण उनमें बहुमुखी समस्याओं का निर्माण हुआ |

मोहनदास नैमिशराय जी के उपन्यासों में दलित जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है | उन्होंने भोगे हुए यथार्थ, दर्द, पीड़ा, यातना और प्रताड़ना को स्पष्ट किया है | जिसका जलता

है वही उसकी व्यथा जानता है, दलितों के दुख-दर्द को अनुभूती करनेवाला मनुष्य ही दलितों के बारे में लिख सकता है | जन्मत: दलित होने पर एक आदमी को जिन आसंगों से गुजरना पड़ता है, उसका अनुभव सिर्फ एक दलित ही कर सकता है | गैर-दलित उस अनुभव को उतनी तीव्रता और तनाव को ज्ञात नहीं कर सकता | 15 अगस्त, 1947 में भारत को स्वाधीनता प्राप्त हो गई, देश का मुक्तिपर्व आ गया परंतु दलित जन-जातियों का मुक्तिपर्व कब आएगा ? जमींदार, जागिरदार, नवाबसाहब एवं पूँजीवादियों की दलित परंपरा से गुलामी करते आए हैं | उन्होंने दलित जनता का शोषण करके उसे दबाकर रखा | आज शिक्षा के प्रचार-प्रसार से उनमें वैज्ञानिक दृष्टि प्राप्त हुई है | पाश्चात्य प्रभावों से दलित जन-जीवन प्रभावित हो रहा है | दलित जन-जीवन में गुलामी की समस्या, शिक्षा समस्या, मंदिर प्रवेश समस्या, जातिभेद समस्या, आंतरजातीय विवाह की समस्या, न्याय की समस्याएँ उभरने लगी है | दलित साहित्य के चितेरे मोहनदास नैमिशराय जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से उन समस्याओं पर प्रकाश ड़ाला है |

4.1.1. स्वातंत्र्यता तथा मुक्तता की समस्या :

विवेच्य उपन्यासों में स्वातंत्र्य की समस्या को रेखांकित किया है | प्राचीन काल से दलितों को अपने अधिकारों से दूर रखा गया है | सवर्णों ने स्वतंत्रता की गंध उन तक पहुँचने नहीं दी | उन्हें जाति के कटघरे में बन्ध करके अन्याय करते रहे | उन्हें शिक्षा व्यवस्था से कोसों दूर रखा गया | उन्हें जानवरों की तरह जीवन बिताने के लिए बाध्य किया | उन्हें भौतिक सुख-सुविधाओं से भी दूर रखा गया | उनकी अपनी वेदना भी अब उन्हें असह्य लग रही थी | जिस प्रकार हिंदूओं को चाहिए था रामायण, इसलिए उन्होंने वाल्मीकि को बुलाया | हिंदूओं को चाहिए था महाभारत, इसलिए उन्होंने व्यास को बुलाया | दलितों को इन सवर्णों से छुटकारा चाहिए था, इसलिए उन्होंने डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी को बुलाया | उन्होंने दलितों की अस्मिता और पहचान का एहसास कराया | उन्होंने दलितों को शिक्षित बनकर संगठित होकर इस अमानवीय सवर्णों से संघर्ष करने का संदेश दिया | आज दलित अपने अधिकारों के प्रति सजग एवं सचेत हो गया है | फिर भी प्राचीन काल से चली आयी वर्ण व्यवस्था की मानसिकता को सवर्ण बदलने के

लिए तैयार नहीं है | वह दलितों को देश स्वतंत्र होने पर भी स्वातंत्र्य देना नहीं चाहते | वह दलितों को गुलाम बनाकर ही रखने की मानसिकता रखते हैं |

मोहनदास नैमिशराय जी ने स्वतंत्रता की समस्या पर कठोर प्रहार किया है | हम मुक्तिपर्व किसे कहे.....? जब देश आजाद हुआ उसे या जब किसी जाति या कुछ जातियों को आजादी मिली उसे | मुक्ति से आखिर तात्पर्य क्या है, एक आदमी की मुक्ति या एक विशेष जाति की.....? यही सवाल आजादी के बाद से लेकर अब तक दलितों के भीतर उठता रहा है, जो उनकी भावनाओं को समय-समय पर उद्वेलित करता रहा है | 'भारतीय संस्कृति कोश' में स्वतंत्रता के अर्थ में इसका उल्लेख इस प्रकार मिलता है - "किसी नागरिक के साथ धर्म, जाति, लिंग, जन्मस्थान आदि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता ..... अपनी इच्छानुसार धर्म का पालन करने तथा कहीं भी रहने की स्वतंत्रता है |"[१] विवेच्य उपन्यास 'मुक्तिपर्व' उपन्यास का कथानक भी इसी तरह के विषय के आसपास घूमता है | जब आजादी मिलने के बाद भी दलितों को न्याय नहीं मिल पाता है, तब वे यह सोचने के लिए मजबूर होते हैं कि यह आजादी आखिर किसके लिए ? उनका मुक्तिपर्व कब आएगा ? जैसे-जैसे आजादी का सूरज निकलता है वैसे-वैसे दलितों के भीतर आत्मविश्वास बढ़ता है | जहाँ एक तरफ उनके बीच हर्षोल्लास होता है वहीं दूसरी ओर नवाबों तथा जमींदारों में कुंठाएँ जन्म लेती है | वे दलितों को वैसे ही गुलाम समझने की खुशकहमी रखते हैं | उन्हें देश और समाज को मिली आजादी सुहाती नहीं हैं | नवाब साहब बंसी को कहता है कि, "तुम गुलाम थे, गुलाम हो और गुलाम रहोगे |"[२]

4.1.2. गुलामी की समस्या :-

भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है | भारतीय समाज में ऊँच-नीच, दलित-सवर्ण आदि कई भेद हो गए हैं | ऊँच-नीच के भेदभाव से उच्च वर्ग निम्न वर्ग का शोषण करता है | अज्ञान, अशिक्षा एवं अंधश्रद्धा के कारण दलितों का जमींदार,

---

1. संपादक लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय' - भारतीय संस्कृति कोश, पृष्ठ क्र.926
2. मोहनदास नैमिशराय - मुक्तिपर्व, पृष्ठ क्र.28

जागिरदार, नवाबसाहब शोषण कर रहे हैं | भारतीय समाज व्यवस्था में आजादी के पूर्व से आजादी मिलने पर भी सवर्ण दलितों पर अत्याचार कर रहा है | जब जातीय दग्धता बुझेगी तब देश की एकता एवं अखंड़ता का सपना पूरा होगा | उच्च वर्ग ने सत्ता एवं धन के बल पर सामंतवादी प्रवृत्ति को बनाए रखने का प्रयास किया एवं दलितों का शोषण करता रहा | उनकी मानवता की अनुभूति मर चूकी थी | उनमें जब तक मनुष्यता का अविर्भाव नहीं होता तब तक मनुष्यता नहीं रह सकती | सवर्ण दलित मजदूरों से गधे जैसा काम करा लेते हैं और आमदनी नाममात्र देते हैं सवर्ण कई हथकंड़ों को अपनाकर दलितों को गुलाम बनाकर रखना चाहते हैं |

'मुक्तिपर्व' उपन्यास में गुलामी की समस्याओं को उजागर किया है | आजादी की लड़ाई का यह अंतिम चरण था | शहर में अंग्रेजी सेना और क्रांतिकारियों की मुठभेड़ हुई थी | जमीन का चप्पा-चप्पा आतंकित था | इस शहर में दलित भी असमंजस में थे | उन्हें विरासत में दोहरी गुलामी मिली थी | आखिर उनके दुश्मन कौन हैं ? किसे मार गिराए वे, जिससे उन्हें भी गुलामी से मुक्ति मिल जाए | देश के मालिक अँग्रेज थे, पर उनके मालिक नवाब, जमींदार, काश्तकार थे | उनकी हवेली और खेतों पर उन्हें दस-दस, बारह-बारह घंटे मेहनत करनी पड़ती थी | तब जाकर उनके परिवार को दो वक्त की रोटी नसीब होती थी | वे गुलाम न थे, पर गुलामों की तरह उन्हें रखा जाता था | उनके अपने सुख-दुख से मालिकों का कोई रिश्ता न था | उनका काम था केवल मालिकों का हुक्म बजाना | वे हुक्म के तावेदार थे | इस तावेदारी में जरा-सी भी कहीं कमी हो जाती तो मालिकों के हाथ चलते थे या लातें | उन्हें वे जूती की नोक पर रखते थे | समाज में परंपरा ही कुछ ऐसी थी | दलितों के हक में गालियाँ थी या फिर हंटर | विकृत संस्कृति हो गयी थी उनकी, तभी तो विकृत होकर कमेरों को वे मारते-पिटते थे | उनकी संस्कृति में दया नहीं थी, केवल जुल्म था | पीढ़ी-दर-पीढ़ी दलितों ने जुल्म सहा था |

बंसी नवाब अलवर्दी खां की हवेली पर नौकर था | नवाब की तबीयत खराब हो गयी थी | नवाब बंसी के समय पर न आने के कारण गुस्से में बड़बड़ा रहे थे कि अभी तो आजादी भी नहीं आयी है | आजादी आने पर ये साले क्या करेंगे | बंसी पर नवाब साहब ने पुरा गुस्सा उतारा था नवाब साहब के मुँह के भीतर की खकार बाहर निकलने को हो रही थी | उन्हें लग

रहा था कि अब उल्टी आएगी | नवाब साहब बंसी पर गरजे थे - ला हथेली कर इधर बंसी मरता क्या नहीं करता | बंसी के लिए तो मुँह से निकले नवाब साहब के एक-एक शब्द की तामील करना था | वह भागकर बैठकखाने में आया और जैसे ही बंसी ने उनकी तरफ हथेली की नवाब साहब ने उस पर अंदर का बलगम थूक दिया | ढ़ेर सारी खकार बंसी की हथेली पर उगल दी गई थी | नवाब साहब के लिए वही उगालदान था और वही पीकदान | बंसी की आँखों में आँसू भर आए थे, पर मुँह से उफ तक न की थी उसने | वैसे ही हथेली पर बलगम लिए वह बैठकखाने के बाहर आ गया था | उसके भीतर अँधड़-तूफान था | बाहर से वह बिल्कुल सहज |

पूरे शहर में आजादी मिलने की चर्चा थी | नवाब साहब, जमींदार, जागीरदार, दलित सब स्वतंत्र हो गए थे | डॉ.अम्बेड़कर जी ने उनके मुक्ति के द्वार खोले थे | इस संदर्भ में लेखक कहते हैं - "हम लंबे समय से अपमान सहते आए थे, पर हम गुनहगार न थे | हम हारे हुए लोग थे, जिन्हें आर्यों ने जीतकर हाशिये पर ड़ाल दिया था | ... हम इतिहास से कट गए थे ... पहले हम उजड़े, फिर बस्तियाँ ... हजारों वर्षों से टूटने-बिखरने का यही क्रम चलता रहा ... हम दास बन बैठे | हमारी औरतें उनकी रखैलें बनीं ... परिवार बिखरते गए | कैसा निर्मम था, वह इतिहास और संस्कृति, जिसे हम लंबे समय से ओढ़ते आए थे |"[1] देश आजाद होने पर भी उच्चवर्गीय दलितों को स्वातंत्र्य देना नहीं चाहते थे | नवाब साहब बंसी को कहता है कि तुम गुलाम थे, गुलाम हो और गुलाम ही रहोगे | आज नवाब साहब के व्यवहार ने उसके जख्मों को कुरेद दिया था | बस्ती में हर एक के भीतर जख्म थे, जो हिंदूओं ने भी दिए थे और मुसलमानों ने भी | उनकी अस्मिता को तार-तार करना उन्का पैदाइशी हक था | उन पर जब जाति का जुनून चढ़ा तो वे आदमी को जानवरों की पंक्ति में खड़ा कर देते | डॉ. चंद्रकुमार वरठे लिखते हैं - "जाति-पाँति या वर्ण व्यवस्था को जन्म के आधार पर स्वीकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि मनुष्य मात्र की एक ही जाति है | गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार ही मनुष्य उच्च-नीच होता है | अत: मनुष्य को अपने कर्म अच्छे बनाने का प्रयत्न करना चाहिए |"[2]

---

1. मोहनदास नैमिशराय - अपने अपने पिंजरे (भाग-1), पृष्ठ क्र.18
2. डॉ.चंद्रकुमार वरठे - दलित साहित्य आंदोलन, पृष्ठ क्र.38

4.1.3. शिक्षा समस्या -

प्राचीन काल से मनुव्यवस्था का शिकार दलित रहा है | इस व्यवस्था में सबसे निम्न स्तर दलित माना गया है | परिणामस्वरूप दलितों को शिक्षा से वंचित रखा गया | सभी दलित समस्याओं की जड़ अज्ञान, अंधश्रद्धा एवं अशिक्षा है | प्राचीन काल से दलित सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक दृष्टि से दूर रहा | उसे जातियता के कटघरे में कैद किया है | भौतिक सुख-सुविधाओं से भी दलित दूर रहा है | परिणामत: दलितों का शोषण हो रहा है | आज दलित शिक्षित बनकर संघर्ष कर रहा है, फिर शिक्षा व्यवस्था के सम्राट कहनेवाले दलितों को शिक्षा से दूर रख रहे हैं | प्राचीन काल से दलितों को शिक्षा से दूर रखा है | उन्हें शिक्षा की सुविधा प्राप्त नहीं हो सकी | उन्हें पाठशाला में प्रवेश नहीं मिला, कभी-कभी पाठशाला के बाहर बिठाया जाता | लेकिन दलित समाज को शिक्षित करने का संदेश डॉ.अम्बेड़कर जी ने दिया | परिणामत: आज दलित शिक्षित हो रहे हैं | संविधान में भी दलितों को प्रावधान रखा गया है | इन प्रयासों के बावजूद भी सवर्णों की मानसिकता में कोई परिवर्तन नहीं आ रहा है | इस कारण शिक्षा संबंधी समस्या उभर रही है |

विवेच्य उपन्यास 'मुक्तिपर्व' में मोहनदास नैमिशराय जी ने शिक्षा समस्याओं पर प्रकाश ड़ाला है | आजादी के पूर्व से लेकर देश आजाद होने तक दलितों को सिर्फ गुलाम ही रखा गया | अक्षर ज्ञान तक से उन्हें महरूम रखा गया था | 'मुक्तिपर्व' में बस्ती में स्कूल खोला जाता है | स्कूल का पूरा बजट पास हो गया है | सभी कुछ तैयार है, बस देरी इस बात की है कि कोई भी अध्यापक बस्ती में पढ़ाने को तैयार नहीं होता | वे सभी अध्यापक सवर्ण थे | जो सरस्वती वंदना करते थे | माथे पर तिलक लगाते थे, जनेऊ पहनते थे, चोटी रखते थे, गाय को माता कहते थे, सर्प को दूध पिलाते थे, कुत्तों को अपनी गोद में बिठाते थे, पर दलितों की परछाई से भी दूर रहते थे | उन्हें जानवरों, कीड़ों-मकोड़ों से प्रेम था, पर दलितों से वे घृणा करते थे | देश आजाद होने से दलितों ने सोचा, अब हमारी समस्याएँ सुलझ जाएगी | अब हम पर कोई अन्याय-अत्याचार नहीं करेगा | हाथों को काम मिलेगा | पेट के रोटी मिलेगी | हमें मनुष्यता की जिंदगी बसर करने

मिलेगी | लेकिन दलितों की यह आशा फोल हो गई | उनकी समस्या सुलझने के बजाय अधिक जटिल और बिकट हो गई | इस आजादी से दलितों को फटी जूती जितना भी फायदा नहीं हुआ |

पाँचवी की बोर्ड की परीक्षा पास होने पर बस्ती से थोडी दूर पर ही ज्यूनियर हाई स्कूल में सुनीत को दाखिला लेना था | वहाँ अध्यापक पाण्ड़े ब्राह्मण था |वह सुनीत का उपहास करता हैं | वह कहता है कि समझ गया बच्चू समझ गया, चमारों के स्कूल से आए हो यही ना | पूरी कक्षा में जाति का नाम लेकर सुनीत के जलील किया जाता है | आजादी के बाद भी क्यों लोग जातियों की बात करते हैं | एक-दूसरे को छोटा-बड़ा समझते हैं | जात-पात, छुआछूत का अंत कब होगा | वह स्वयं से ही सवाल करता पर उन्हें क्या अधिकार हैं हमारे जख्मों को कुरेदने का | हम कोई भीख माँगने तो नहीं जाते उनके घरों पर | उल्टे उन्हीं की जाति के लोग स्वयं लाल-पीले कपड़े पहनकर घर-घर जाकर भीख माँगते हैं | लेकिन वे ही दलितों की अस्मिता को तार-तार कर देते हैं | दलित समाज के लोग आखिर कब तक यह सब सहते रहेंगे ?

सुनीत मैरिट के आधार पर स्कॉलरशिप के लिए फार्म भरना चाहता है | फार्म पर कक्षा अध्यापक के हस्ताक्षर कराने थे | लेकिन पिछड़ी जाति का सुनीत स्कॉलरशिप फार्म भरने पर अध्यापक पाण्ड़े उखड़ जाता है | उसे यह पसंद नहीं था कि सुनीत मैरिट के आधार पर स्कॉलरशिप का फार्म भरें | थोड़ी नाराजगी के स्वर में वे बोले - "मेरी समझ में यह नहीं आ रहा है कि जब सरकार ने तुम लोगों के लिए अलग से स्कॉलरशिप देने की योजना बनाई है तो तुम वहीं फार्म क्यों नहीं भर रहे हो ?"[1] उन्हें इस बात का एतराज था कि जाति के आधार पर स्कॉलरशिप का फार्म न भरकर योग्यता के आधार पर भरें | वह सुनीत के फार्म पर हस्ताक्षर करने को टाल रहा था | कभी कहता कि समय नहीं है तो कभी उस पर क्रोधित होता और कहता कि तुम लोगों को सब्र भी नहीं है | वह फार्म भरने के अंतिम दिन तक उसे हस्ताक्षर नहीं देता तो सुनीत हैड़ मास्टर के पास जाकर सच्चाई बताता है | हैड़ मास्टर दुखी हो जाते हैं कि एक मास्टर ऐसा व्यवहार करें | वह उसका फार्म रख लेते हैं और हस्ताक्षर कर लेने का आश्वासन देते हैं |

करतारा के बेटे उछाल को स्कूल में दाखिला देने से अध्यापक पाण्ड़े मुखर रहा

---

1. मोहनदास नैमिशराय - मुक्तिपर्व, पृष्ठ क्र.72

था | उसे शिक्षा के माध्यम से दलितों की प्रगति सुहाती नहीं | इस संदर्भ में जयप्रकाश कर्दम जी का मत द्रष्टव्य लगता है - "जीवन की लड़ाईयों को लड़ने के लिए शिक्षा सबसे ज्यादा मारक और शक्तिशाली शस्त्र है | शिक्षा ही उत्थान और विकास का आधार है |"[1] सुनीत हैड़ मास्टर की सहायता से उछाल का दाखिला कर देता है | उछाल को स्कूल में दाखिला देकर ज्यूनियर हाई स्कूल के हैड़ मास्टर ही उछल गए थे, तब उनके पास पाँच-छ: अध्यापक आ धमके और सीधे-सीधे हेड़ मास्टर को इस्तीफा देने की बात भी कह ड़ाली | उनके आक्रोश का कारण था उछाल, उनके अनुसार जिसे दाखिला देकर अच्छा नहीं किया | अध्यापक पाण्ड़े ने साफ-साफ कह दिया था, "हेड़ मास्टर साहब, यह स्कूल कोई भंगी-चमारों का स्कूल नहीं है जो चाहे गिरे-पड़े, किसी को भी दाखिला दे दो |" वह कट्टर सनातनी थे | आज भी सनातन धर्म के नाम पर जातियता को दृढ़ करने का प्रयास किया जा रहा है | वे लोग वर्णव्यवस्था को छोड़ने को तैयार नहीं है दलितों को आज भी मनुष्य के रूप में नहीं अपनाया जाता फिर यह न अपनानेवाला व्यक्ति पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़ | अध्यापक पाण्ड़े तथा अन्य अध्यापक हैड़ मास्टर का विरोध करते हैं | वे सरकार का आदेश मानने को तैयार नहीं थे, बल्कि सरकार को ही कोसने लगे | हालाँकि पूरे शहर में ही जाति बेल फल-फूलने लगी थी | शिक्षा संस्थानों में सरस्वती वंदना करनेवाले अध्यापक जातियों की दीवारों को गिरा नहीं रहे थे बल्कि शिक्षण भावना और नैतिकता के विपरित वे जाति-विषमता की दीवारों को और ऊँचा उठाने की
मुहिम में लगे थे |

4.1.4. मंदिर प्रवेश की समस्या -

भारतीय समाज व्यवस्था में वर्ण व्यवस्था को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया | धर्मग्रंथ को आधार बनाकर दलितों पर अन्याय किया गया | उन्हें मुलभूत अधिकारों से दूर रखा गया | दलित समाज का एक अंग है | लेकिन उस्का स्थान गौण है | उच्चवर्ग अपने अधिकारों का फायदा उठाकर दलितों पर अत्याचार करते थे | उच-नीच भेद तथा जाति का संकुचित दायरा मानव निर्मित ही है | सदियों से दलित इन कुप्रथाओं को संस्कार मानकर भोगता आया है | हरिजन

1. जयप्रकाश कर्दम - छप्पर, पृष्ठ क्र.44

को अस्पृश्य समझकर उसे मंदिर में प्रवेश निषिद्ध करना कितना अपमानजनक है | केवल अस्पृश्य कहलाने मात्र से वह भगवान के दर्शन भी कर नहीं सकता |

प्राचीन काल से दलितों को मंदिर में प्रवेश नकारा गया | 19 वी शताब्दी में डॉ.बाबासाइब अम्बेड़कर इस महान विभूति ने हिंदू व्यवस्था पर प्रहार किया | दलितों को उनके अधिकारों का एहसास दिलाया | लेकिन वर्णव्यवस्था के कटघरे में बंधे सवर्ण दलितों के मंदिर प्रवेश का विरोध करते हैं | सवर्णो ने ईश्वर पर अपना अधिकार किया था | आज भी मंदिर प्रवेश की समस्या देखाई देती है |

विवेच्य उपन्यास 'मुक्तिपर्व' में नैमिशराय जी ने मंदिर प्रवेश की समस्या पर प्रकाश ड़ाला है | 'मुक्तिपर्व' में शहर में मस्जीद भी थी और मंदिर भी | एक में लोग खुदा को याद करते, दूसरे में भगवान को | दलित किसको याद करें | बंसी की समझ में नहीं आता था | वह बार-बार अपने आप से सवाल करता कि क्या हमारे हिस्से में देवी-देवता नहीं है, हमारे कौन सी देवी-देवताएँ हैं? हम किसकी पूजा करें, न मंदिरों में उनके लिए प्रवेश हैं और न मस्जीदों में | क्या वे इंसान नहीं | उन्होंने आखिर कौन-सी गलती की है, उन्हें मंदिरों में प्रवेश की इजाजत क्यों नहीं है | तथाकथित श्रेष्ठ जाति के लोग दलितों की परछाई से भी दूर रहते थे | उन्हें देखना वे अपशकुन मानते थे | जानवरों को चाहे जैसे हाँक दिया, वैसी स्थिति उनकी भी थी | दलित समाज के लोग मजबूर थे | उनका बोलना सहन नहीं होता था | बोलने पर उन्हें दंड़ सहन करना पड़ता था | उन्हें सुनना होता था | मंदिर प्रवेश तो दूर की बात थी | इसके विरूद्ध प्रतिक्रिया व्यक्त करने पर उनकी जीभ काट ली जाती थी | दुनिया के विधानों से अलग विधान थे, इस देश की धरती पर |

बोर्ड़ की परीक्षा में प्रथम श्रेणी मिलने पर सुनीत ने गंगाराम हाईस्कूल में एड़मिशन लिया था | वहाँ नवीं कक्षा के अध्यापक का नाम था शिवानंद शर्मा | उन्होंने स्कूल के अहाते में स्थित शिव मंदिर बनवा लिया था | वे मास्टर कम और पुजारी अधिक थे | वे स्कूल के नजदीक ही प्रधानाचार्य निवास में रहते थे | नजदीक पड़ने में उन्हें दो तरह की सुविधाएँ थी | पहली मंदिर में आई दान-दक्षिणा वे स्वयं ही लेते थे और दूसरी मंदिर उनका बैठक खाना भी था | वहीं वे टयूशन

भी पढ़ाते थे | मंदिर से उन्हें लाभ ही लाभ थे | यह उनका धार्मिक व्यवसाय था | जो बारह महिने फलता-फूलता था | धर्म के रक्षक कहनेवाले ब्राह्मणों ने धर्म के नाम पर समाज व्यवस्था को बिगाड़ने का कार्य किया | दक्षिणा पाना, दान लेना आदि तरिके से धन कमाते हैं | वे अज्ञानी दलितों को अपने षड़यंत्र से अधिक दयनीय बनाते हैं | नए-नए हथकंड़ों का इस्तेमाल करके दलितों का शोषण करते हैं |

सुनीत अभी तक मंदिर न गया था | पहला पीरियड़ आज खाली था | शिवानंद शर्मा आए नहीं थे | इस कारण वह हबीबुल्ला के साथ मंदिर देखने चला गया | तभी अचानक मंदिर में शिवानंद शर्मा जी आए | दोनों को देखकर उनका गुस्सा चढ़ गया था | बरबस ही उनके मुँह से निकल पड़ा - "एक मांस काटनेवाला और दूसरा मांस खींचनेवाला | हे भगवान, हे भगवान, सत्यानाश हो तुम्हारा | हमारा तो मंदिर ही भ्रष्ट कर दिया |"[१] सुनकर वे दोनों मंदिर से लौट आए थे | स्कूल में वही अध्यापक 'ईश्वर और बच्चे' यह पाठ पढ़ाते समय कहते हैं - बच्चे तो भगवान का रूप होते हैं? अध्यापक की बात सुनकर अजीब-सा लगा सुनीत को | उसके मन में आया कि कौन से बच्चे भगवान का रूप होते हैं ? कौन-सा भगवान है वह ? उसके भीतर बार-बार सवाल उठ रहे थे | इस संदर्भ में जयप्रकाश कर्दम का मत द्रष्टव्य लगता है - "धर्मग्रंथ ही हमारे शोषण और अत्याचार की जड़े हैं | इन जड़ों को उखाड़ फेंकने की जरूरत हैं और उसके लिए जरूरी है कि लोग अधिक से अधिक पढ़ें ताकि इन धर्मग्रंथों में निहित अन्याय और असमानता के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए स्वयं को तैयार कर सके |"[२]

विवेच्य उपन्यास 'वीरांगना झलकारी बाई' उपन्यास में भी मंदिर प्रवेश समस्या उभरकर सामने आयी है | झाँसी हिंदू रियासत थी | किले के महल में रानी ने चैत की नवरात्रि में गौरी की प्रतिमा की स्थापना की | इस उत्सव में सारे नगर की महिलाएँ व्यस्त थी | उस विशेष अवसर पर किले में जाने की सब जातियों को आजादी थी, पर जहाँ अपने कक्ष में रानी ने गौरी को स्थापित किया था वहाँ दलित जातियों की स्त्रियाँ नहीं जा सकती थी | उनके लिए वहाँ जाने

1. मोहनदास नैमिशराय - मुक्तिपर्व, पृष्ठ क्र.111
2. जयप्रकाश कर्दम - छप्पर, पृष्ठ क्र.44

की मनाही थी | गौरी की प्रतिमा कहीं वे छू न लें और वहीं प्रतिमा भ्रष्ट हो जाए इस बात का उन्हें ड़र था | गौरी पूजन देखना भी उनके लिए अशुभ था | हिंदू धर्म में अपनी परिपाटियों के कारण विरोधाभास था | इस तरह से दलितों के मंदिर प्रवेश के लिए तथा देवी-देवताओं की पूजा में लाख समस्याएँ खड़ी हो जाती है |

4.1.5. जातिभेद की समस्या -

प्राचीन काल से जातीयता के बीज सवर्णों ने बोये हैं | आज भी समाज में पूर्णत: जात-पात, छुआछूत दिखाई देती है | भारत में राष्ट्रीय एकात्मता की भावना दृढ़ करने का प्रयास किया जा रहा है | फिर भी अपने-अपने समाज का अलग समुदाय बनता है | ग्रामीण लोग अपनी-अपनी जाति को सुरक्षित रखने का प्रयास कर रहे हैं | आज धर्म और ईश्वर के कारण ही मानवधर्म की स्थापना करने में असफल हो रहे हैं | हमें मानवधर्म की स्थापना करने के लिए जातियता की दीवारें तोड़ देनी चाहिए | भारतीय समाज व्यवस्था में जातीय भेदा-भेद और छुआ-छूत की भावना प्रबल है | आज जाति व्यवस्था से दलित और सवर्ण संघर्ष उभरकर सामने आया है | जब तक जातियता नष्ट नहीं होती, तब तक मानवधर्म की स्थापना नहीं हो सकती | दलितों को अछूत मानकर उसे दूर रखा जाता है | शिक्षा व्यवस्था में पाठशाला के बाहर बिठाने की अमानवीय प्रवृत्ति

दिखाई देती है | जातियता के कारण एकता खतरे में रही है | सांप्रदायिकता के मूल में जातियता की भावना समाप्त नहीं होती तब तक सही अर्थ में राष्ट्रीय एकता संभव नहीं है | मोहनदास नैमिशराय जी ने अपने उपन्यासों में कुछ ऐसी समस्याओं का चित्रण किया है जो सिर्फ जाति के कारण उपजी है | जातियता भारत को लगा हुआ एक कलंक है | लेकिन उसकी पीड़ा तथा वेदना तमाम दलित जाति को सहनी पड़ रही है | इसी जातियता ने गुलामी, दुख, वेदना के सिवा कुछ नहीं दिया है | जाति के नाम पर जीना सबसे भयावह और तकलीफ देह होता है | प्राचीन काल से दलित समाज के लोग हाशिये पर थे | उन्हें प्राकृतिक जल भी नसीब नहीं था | उन्हें मंदिर प्रवेश निषिद्ध माना गया था | तत्कालीन समाज मे सवर्णों को विशेषाधिकार थे | उन्हें जाति का नाम लेकर जलील किया जाता था | सवर्ण उनकी परछाई से भी दूर रहते थे | वे दलितों की अस्मित

एवं पहचान पर चोट करते थे | उन्हें जानवरों की तरह परेशान किया जाता था | मोहनदास नैमिशराय जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से जातीय समस्या पर प्रहार किया है |

विवेच्य उपन्यास 'मुक्तिपर्व' में जातीय समस्या पर कड़ी चोट की है | सुनीत और बंसी को प्याऊवाले पंड़ित ने नलकी से पानी पिलाया | सुनीत का स्वर नाराजगी से भर गया | उन्हें अच्छी तरह से पानी भी नसीब नहीं था | पंड़ित के भीतर विषमता भरी थी इसलिए उसका व्यवहार भी ऐसा ही था | दलित समाज के लोग जहाँ भी थे, हाशिये पर थे | गाँव हो या शहर उनकी बस्तियाँ शेष समाज से अलग-अलग होती थी | उनके घर अलग-अलग से पहचाने जाते थे | उनका व्यवसाय दूसरे लोगों से अलग था | वे जितना अपने आपको ढ़ोते उतना ही गुलामी को भी | इसलिए उनके भीतर जैसे घाव होते वे वैसे ही बाहर भी दिखाई देते | वे अपने घावों का जितना भी इलाज करते, नए घाव उतने ही हो जाते | भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था एक सच्चाई है जिसने सदियों से इस देश के जनमानस को टुकड़ों में बाँटा हैं तथा उनके मानवीय संस्कारों को भी छिन्न-भिन्न किया है |

दलितों को इतिहास से काटकर रख दिया गया था | अब वर्तमान से भी काटने के प्रयास हो रहे थे, पर इतिहास से काटकर अलग रख देने में जितनी सफलता मिली, उतनी वर्तमान से काटने में सफलता नहीं मिल पा रही थी | अब वे न दीन थे और न हीन बल्कि जुझारू बन रहे थे | उनके भीतर का दर्द बाहर आता तो वे अपने-आप से ही सवाल-जवाब करते | इस उपन्यास के शहर में मस्जिद भी थी और मंदिर भी | एक में लोग खुदा को याद करते और दूसरे में भगवान को | दलित किसको याद करें | बंसी के समझ में नहीं आता था | वह बार-बार अपने-आपसे सवाल करता कि क्या हमारे हिस्से में देवी-देवता नहीं हैं, हमारे कौन-से देवी-देवता हैं ? हम किनकी पूजा करें, न मंदिरों में उनके लिए प्रवेश है और न मस्जीदों में | क्या वे इंसान नहीं है ? उन्होंने आखिर कौन-सी गलती की है, उन्हें मंदिरों में प्रवेश की इजाजत क्यों नहीं है | शिवानंद शर्मा जी ने स्कूल के अहाते में ही शिव मंदिर बनवा लिया | हबीबुल्ला और सुनीत मंदिर देखने जाते हैं | उन दोनों को मंदिर में देखकर शिवानंद शर्मा क्रोधित होते हैं | वे कहते है एक मांस काटनेवाला और दूसरा मांस खींचनेवाला | हे भगवान, हे भगवान सत्यानाश हो तुम्हारा |

हमारा तो मंदिर ही भ्रष्ट कर दिया | जाति का नाश हुए बिना सामाजिक समता की कोई संभावना नहीं है |

विवेच्य उपन्यास 'वीरांगना झलकारी बाई' में भी जातिभेद की समस्या उभरकर आयी है | बचपन में झलकारी बाघ मार डालती है | झलकारी ने बाघ मारने की घटना गाँव के लिए गौरव की बात थी | इस घटना से सवर्ण लोगों को ईर्ष्या थी | छोटी जात की लड़की किसी बाघ को मार दे | तत्कालीन समाज में वीरता और बहादुरी के सारे गुण सवर्ण समाज के क्षत्रियों के लिए सुरक्षित थे | फिर ऊँची जातियों के लोग आसानी से भला कैसे स्वीकार कर लेते कि कोरी जाति की एक लड़की ने बाघ को मार गिराया | कुछ लोग बाघ मारने की घटना को पूर्वजन्म से जोड़ने लगे थे | गाँव के पंड़ित ने स्वयं कहा था | झलकारी पिछले जन्म में क्षत्रिय परिवार में पैदा हुई होगी | तभी का असर है उसपर | वह असर तो जन्म-जन्मांतर रहता है | इस बात पर भोजला गाँव के दलित और पिछड़ी जाति के लोग इसपर क्या विश्लेषण करते | विश्लेषण करने का सामर्थ्य तो सवर्णों के पास था | वे चाहे तो राई को पर्वत बना दे और पर्वत को राई |

तत्कालीन समाज में सवर्ण जातियों के लोगों के पास सुनाने के विशेषाधिकार थे | दलित समाज को सुनना पड़ता था | जब सवर्णों को दलितों, पिछड़ी जाति की जरूरत पड़ती, तुरंत बुलाते | सवर्णों के रक्षा कवच पिछड़ी जाति थी | पिछड़ी जाति और दलित हिल-मिलकर रहने से सवर्णों को एतराज था | सवर्ण पिछड़ी जाति के लोगों को सछूत तो दलित को अछूत मानते थे | बीच में बस यही रेखा थी, जो दलित पिछड़े को एक होने से रोकती थी | झलकारी के शौर्य की यह रोचक घटना चारों ओर फैल चुकी थी | पर कोई पूछ बैठता कौन की बिटिया आय? जवाब मिलता, "कोरिन की |" रानी माता-पिता के नाम से पहले ही जाति का नाम आ जाता | लोगों की पहचान जाति, कुल, गोत्र से ही होती थी | वे जातियाँ उन्हें विरासत में मिलती थी | ऐसी परंपरा थी हिंदू समाज में | चन्ना-रमची की जोड़ी के बारे में भोजला गाँव में सभी जानते थे | एक जात से जाटव और दूसरा वाल्मीकि | चन्ना का पूरा नाम था चम्पालाल और रमची का रामचरण | लोग उन्हें पूरे नाम से नहीं पुकारते थे | कभी-कभी तो अधुरा नाम भी उनके हिस्से में नहीं आता था |

हिस्से में आती थी जात के नाम पर दी गई जलालत | सवर्ण जाति के अधिकांश लोग उन्हें गलत संबोधन से पुकारते थे | सवर्णों का उद्देश्य था दलितों की जातिय अस्मिता और पहचान पर चोट करना, उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाना | दलितों को मुख्य मार्ग पर चलने की मनाही थी | तथाकथित श्रेष्ठ जाति के लोग उनकी परछाइं से भी दूर रहते थे | उन्हें देखना वे अपशकुन मानते थे | जानवरों को चाहे जैसा हाँक दिया, वैसी स्थिति उनकी भी थी | दलित समाज के लोग मजबूर थे | उनका बोलना सहन नहीं होता था | बोतने पर उन्हें दंड़ सहन करना पड़ता था | उन्हें सुनना होता था | प्रतिक्रिया व्यक्त करने पर उनको जीभ काट ली जाती थी | दुनिया के विधानों से अलग विधान थे इस देश की धरती पर | सभी रियासतों और राजाओं में छुआछूत थी | कहीं अधिक उग्र रूप था तो कहीं कम | हर जगह आदमी की पहचान उसकी जात से होती थी | उसी के आधार पर उनका मान-सम्मान होता था | दलित जातियों के लोग परकोटे के बाहर रहते थे | नगर में जातियों के आधार पर ही बस्तियाँ और पड़ाव थे | इस संदर्भ में बाबुराव बागुल का मत द्रष्टव्य है - "इस सुंदर देश को एक विचित्र रोग है अस्पृश्यता | हिंदू विचारवंत जिनके सामने नतमस्तक होते हैं उन मुनी-महात्माओं ने अस्पृश्यता ऐसी कुशलता से रचि है कि उसकी प्रतिभा से सीर में दर्द होता है | हमारे समाज में जाति व्यवस्था हर एक रूप से हर एक मन में बसी हुई है | धर्मांतर करके भी वह नहीं जाएगी क्योंकि वह देह में नहीं मन में हैं |"[१]

4.1.6. आंतरजातिय विवाह की समस्या -

प्राचीन काल से ही वर्ण व्यवस्था हिंदू समाज की आधारशिला रही है, किंतु उसका दुष्परिणाम यह हुआ कि समाज की सर्वाधिक सेवा करनेवाला वर्ग पिसता रहा तथा हेय समझा जाने लगा | उसे अछूत समझा जाने लगा और कालांतर में उसे आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया, वह नाममात्र का हिंदू रह गया | आज सभी मिलकर जातीयता तोड़ने की बात चल रही है | लेकिन मेरी तो यह मान्यता है कि सवर्ण व्यक्ति चाहे कितना भी आधुनिक एवं प्रगतिशील हो, घर में वह जातिवादी ही होता है | उसके खाने के दात अलग और दिखाने के अलग होते हैं | इन जहरिले दाँतों को उखाड़कर फेंक देना चाहिए | उनका

1. बाबुराव बागुल - दलित साहित्य एक अभ्यास, पृष्ठ क्र.36

दंश बड़ा ही जहरीला होता है | वह समूची पीढ़ी को बरबाद कर देता है | हम अपनी बात एक बड़े समाज तक पहुँचना चाहते हैं | जो हमने महसूस किया है, जो संस्कृतियाँ हम जीते हैं, जिन्हें हम बाँटते हैं | हमारी आपस की बहसें, जिसे आप गाली-गलौच कहते हैं - कहाँ से आती हैं ? वह सब हमें सिखाया जाता है | हमारे सपनों में सुंदर-सुंदर देवता नहीं आते हैं | वहाँ राक्षस की तरह विकराल लोग आते हैं | उनकी सभी चीजें भयावह होती हैं | आखिर क्यों ऐसे ही चेहरें हमारे सपनों में आते हैं ? या देवता आते भी है तो राम की तरह शम्बूक की गरदन काटते नजर आते हैं, उनके चेहरे हमें राक्षस की तरह ही ड़रानेवाले दिखते हैं |

विवेच्य उपन्यास 'वीरांगना झलकारी बाई' में नैमिशराय जी ने आंतरजातिय विवाह की समस्या को उजागर किया है | मछरिया जात से भंगी, पर भा गई थी नारायण शास्त्री को | हिंदू समाज की वर्ण-व्यवस्था से उसका कद छोटा था, लेकिन रूप और लावण्य के आधार पर देखा जाए तो वह बामनियों, ठकुराईनों को भी मात देती थी | शास्त्री उसकी एक-एक अदा पर मरते थे | शास्त्री अधिक गहरे डूबते तो कविता लिख देते | मछरिया उनकी कविता की प्रेरणादायिनी थी | मछरिया को उन्होंने अपने घर में रख लिया था | दासी या रखैल बनाकर नहीं तो अपनी पत्नी बनाकर | जो सीधे-सीधे ब्राह्मणी समाज को चुनौती थी | झाँसी में आंतरजातिय विवाह की शायद पहली घटना थी | झाँसी के रूढ़िवादी लोग इस आंतरजातिय दम्पत्ति से जले-फूँके रहते थे | वे हर समय किसी न किसी अवसर की तलाश में रहते थे कि कैसे उन्हें नीचा दिखाया जाए | शास्त्री को कोई धर्मद्रोही कहता | कोई कहता कि मछरिया ने एक ब्राह्मण को पतित कर दिया | उस पर जंगली कुत्ते छोड़े जाने चाहिए | उसके टुकड़े-टुकड़े कर चील-कौवों को खिला देने चाहिए | चांड़ाल की जनी और ब्राह्मण के घर घुस गयी | उसे जरा भी आचार-विचार का ध्यान न रहा |

मछरिया के घर में अलग कोहराम मचा था | गुंड़ई पर उतर आए थे कुछ लोग | ईंट पत्थर भी फेंक दिए थे उसके घर में | ईंट-पत्थर फेंकनेवालों का कुछ आता-पता नहीं चला था | जाते हुए वे आग लगाने की धमकी दे गए थे | उनकी धमकी का जवाब देता भी कौन ? घर में उम्र के अंतिम पड़ाव पर मौत की प्रतीक्षा करता हुआ मछरिया का बूढ़ा बाप | मछरिया हर रोज

आती थी अपने बूढ़े बाप को देखने के लिए | बस्ती के लोग वैसे ही खार खाए बैठे थे | मछरिया पर दोहरी मार पड़ रही थी | बस्ती में आती नो उसकी जात के लोग लुगाई उसे खाने को दौड़ते | बस्ती से बाहर जाती तो गैरों के घृणास्पद रवैये को झेलना पड़ता | इस संदर्भ में डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा का मत द्रष्टव्य लगता है - "लोग जाति-पाति का ध्यान अभी तक इतना रखते हैं कि गरीब से गरीब व्यक्ति भी इसके पालन में अपने आप पर गर्व करता है |"[1] झाँसी हिंदू रियासत थी | राजा शास्त्री के हाव-भाव, उनके व्यवहार तथा प्रवृत्ति को अच्छी तरह से जानते-समझते थे | शास्त्री और मछरिया को भी बुलवाया गया था | सभी के होठों पर यही सवाल था कि शास्त्री और मछरिया को राजा आखिर क्या फैसला सुनाता है ? दरबारियों दवारा मछरिया को लालच दिया गया | शायद मन बदल जाए | धमकाया भी गया | शास्त्री को शास्त्रों की दुहाई दी गई | लोकलज्जा और लोकमर्यादा का वास्ता दिया गया | पर मछरिया और शास्त्री में टूटन क्या दरार तक न मिली | न शास्त्री मछरिया को छोड़ने के लिए तैयार थे और न मछरिया | उनकी देह दो थी, पर सांस जैसे एक | वे एक-दूसरे के लिए मरने-मिटने को तैयार थे | मछरिया और शास्त्री का प्रेम न राजा को रास था और न दरबारियों को | अंतत: राजा को फैसला देना पड़ा | फैसला था देश से उन्हें निकाल दिया जाए | इस प्रकार पुरूष प्रधान संस्कृति ने नारी पर अन्याय किया है |

4.1.7. न्याय संबंधी समस्या -

हिंदू लोग कहते हैं कि उनकी सभ्यता दुनिया की प्राचीनतम सभ्यता है और धर्म के रूप में हिंदू धर्म की अपेक्षा श्रेष्ठ है | यदि यह सही है तो फिर हिंदू धर्म कैसे इतने सारे लोगों का उत्थान करने में असमर्थ रह गया, कैसे वह दलितों में ज्ञान एवं उम्मीद का संचार नहीं कर सका? यह कैसे हुआ कि जब लाखों दलित अपराध और गैरत की जिंदगी बसर कर रहे थे, तो हिंदू धर्म असहाय सा खड़ा रहा ? इसका जवाव यही है कि हिंदू धर्म अपवित्र होने के भय से ग्रासित रहा | उसने शुद्ध होने की शक्ति अर्जित नहीं की थी | हिंदू धर्म के अंदर सेवा-भाव एवं मानवता की भावना नहीं थी | इसलिए वे अमानवीय और अनैतिक व्यवहार करते रहे | वर्तमान पंचायती राज का लोकतांत्रिक स्वरूप जातिवादी ही है | लोकतंत्र आज भी सवर्ण समाज के हाथों

1. डॉ.ज्योत्स्ना शर्मा - शिवाणी का हिंदी साहित्य: सामाजिक परिप्रेक्ष में, पृष्ठ क्र.80

में दलितों के शोषण और अत्याचारों का एक हथियार बना हुआ है | आज कल के लड़के जातपात तोड़ना नहीं चाहते हैं | मंदिर नहीं जाते | ब्राह्मणों को प्रतिष्ठा नहीं देते | उनका चरण तीर्थ नहीं लेते | पंचगण्य को छूते नहीं | उन्हें धर्मग्रंथ की सच्चाई समझ आयी है | जिस धर्मग्रंथ में चर्तुवर्ण्य का समर्थन है, वह धर्मग्रंथ का दलित विरोध कर रहे हैं | जिस रामायण में शम्बूक का वध है वह उसका खुलेआम विरोध कर रहे है | शुद्र ने मंत्र सुना तो उसके कानों में गरम शीशे का रस ड़ालने का आदेश मनुस्मृति में दिया गया है | हिंदूओं की ऐसी प्रवृत्तियों का वे कैसे आदर कर सकते हैं | भारत में सुराज्य नहीं है, जहाँ बड़े-बड़े महंत खड़े-खड़े देश को निचोड़ते हैं | यहाँ मनुष्य भूख से कराह कर प्राण छोड़ रहा है | स्वातंज्य प्राप्ति के बाद भी दलितों को कोई भी चीज हक्क एवं न्याय से नहीं मिली है | उन्हें जानवरों की तरह जिंदगी बसर करने के लिए जलील किया गया | वर्ण-व्यवस्था ने उन्हें मजबूर किया था | इस संदर्भ में ओमप्रकाश वाल्मीकि का मत द्रष्टव्य लगता है -

"पूजते हो गांधी के हत्यारे को
तोड़ते हो इबादतगाह झुण्ड़ बनाकर |
कभी सोचा है
गंधे नाले के किनारे बसे
वर्ण-व्यवस्था के मारे लोग
इस तरह क्यों जीते हैं ?
तुम पराए क्यों लगते हो उन्हें
कभी सोचा है ?"[1]

प्राचीन काल से भारत में मनुवादी न्यायव्यवस्था का बोलबाला था | इस न्याय व्यवस्था में दलित सदैव पिसता आया है | ब्राह्मणों को दंड़ देने की व्यवस्था नहीं थी | दलितों को दंड़ देने की कोई सीमा नहीं थी | इस प्रकार को न्याय व्यवस्था का पर्दाफाश नैमिशराय जी ने किया है |

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि - बस ! बहुत हो चुका, पृष्ठ क्र.51

विवेच्य उपन्यास 'वीरांगना झलकारी बाई' में मछरिया जात से भंगी, पर भा गई थी नारायण शास्त्री को | मछरिया को उन्होंने अपने घर में रख लिया था | दासी या रखैल बनाकर नहीं बल्कि अपनी पत्नी के रूप में | जो सीधे-सीधे ब्राह्मणी समाज को चुनौती थी | झाँसी हिंदू रियासत थी | राजा शास्त्री के हाव-भाव, उसके व्यवहार तथा प्रवृत्ति को अच्छी तरह से जानते-समझते थे | पर उनपर सीधे-सीधे हाथ ड़ालते हुए घबराते थे | यहाँ तक कि उन्हें ड़ाँट-उपट भी नहीं सकते थे | कोई छोटी जात से होता तो अब तक कई बार हड़का भी देते | उसे दंड़ भी दे देते | राजा के लिए दंड़ देने को कोई सीमा नहीं थी | पर वर्ण-व्यवस्था ने राजा को भी सीमा में बाँधा हुआ था | राजा अपनी मर्जी से ब्राह्मण के लिए दंड़ बना नहीं सकते थे | इस प्रकार जाति-व्यवस्था के श्रेणी-विभाजन और अस्पृश्यता के शिकार दलित होते थे | उनके लिए अलग न्याय की व्यवस्था थी | न्याय की नहीं बल्कि अन्याय की व्यवस्था थी |

झाँसी में अंतर्जातीय विवाह की शायद पहली घटना थी | शास्त्री और मछरिया को दरबार में बुलवाया गया था | दरबारियों द्वारा मछरिया को लालच दिया गया | शायद मन बदल जाए | धमकाया भी गया | शास्त्री को शास्त्रों की दुहाई दी गई | लोकलज्जा और लोकमर्यादा का वास्ता दिया गया | पर वे एक-दूसरे के लिए मरने-मिटने को तैयार थे | मछरिया और शास्त्री का प्रेम न राजा को रास था और न दरबारियों को | अंततः राजा को फैसला देना पड़ा | फैसला था देश से निकाला जाए | इस प्रकार की मनुवादी प्रवृत्ति से दलितों को न्याय मिलता था | दलित सदियों से इस प्रकार की जिंदगी जिता आया है | उसे गुलामी करनी है, उतना ही न्याय किया गया था | इस संदर्भ में डॉ.नग्मा जावेद का मत द्रष्टव्य लगता है - "दलित वर्ग समाज का वह वर्ग है जिसने हमेशा शोषण को सहा है | सवर्ण समाज की जूतियाँ खायी है | उनका मल-मूत्र बटोरा है, उनकी सेवा-टहल की है और बदले में उसे दो जून की रोटी भी नसीब नहीं हुई है, उस वर्ग के बच्चों ने दूध पीकर खिलौनों से खेलकर बचपन नहीं गुजारा, बल्कि बची-खुची बासी, सुखी रोटी पानी के साथ हलक में उतरी है | जिंदगी की मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित इस वर्ग में सदियों से जीवन को जिया नहीं बल्कि ढ़ोया है |"[1]

1. संपा.रतनकुमार पाण्ड़ेय - अनभै, अंक - 3, जुलाई-सितंबर 2004, पृष्ठ क्र.73

इसके साथ ही झाँसी में दत्तक को गवर्नर जनरल ने नामंजूर किया | झाँसी के इतिहास की इसी दुखद घड़ी से रानी ने युद्ध की तैयारी करनी आरंभ कर दी थी | उसने दलित समाज की एक महिला झलकारी को महिला सेना का कमांड़र बना दिया था | झलकारी अंजली टोरिया पर निशानेबाजी करने आती थी | उसने सुना था कि कोई भेड़िया बछड़े, भेड़, बकरी मारकर खा जाता है | वह उसका शिकार करने एक सुबह जाती है | लेकिन वहाँ पर गलती से गोली एक बछिया के पैर में लगती है | जो कुछ खास घायल नहीं हुई थी | बछिया एक ब्राह्मण की थी | वहाँ से हटाकर चुपके से दतिया रवाना कर दी थी और ब्राह्मण को पढ़ा दिया कि कह दे कि बछिया उसके सामने झलकारी ने मार ड़ाली | एक दलित महिला से बैर चुकाने का अच्छा तरिका ढूँढा था उन्होंने | स्त्री को सदैव सामाजिक अधिकारों एवं न्याय से दूर रखा गया | इस संदर्भ में चित्रा मुदगल जी का मत द्रष्टव्य है, "स्त्री व्यवस्था से सत्ता नहीं अधिकार माँग रही है, उसकी इच्छाओं, सुझावों को महत्व दें, उसे खुली हवा, खुला आसमान दें |"[1]

झाँसी में लोगों ने जाति वहिष्कार का दंड़ देने के लिए पंचायत बुलाने का निर्णय ले लिया | पूरन को पंचायत बैठने की खबर दे दी गयी थी | पंचायत ने निकाल दिया था | पंचायत ने दोनों का मुँह काला करके गधे पर चढ़ाकर बाजार में जुलूस निकालने की बात तय की गयी | इस हिंदू समाज ने उन्हें झूठे ही गऊ ह्त्या के जुर्म में फँसाया था | झलकारी की सलाह से पूरन ने रानी लक्ष्मीबाई को व्यथा बतला दी | तत्काल रानी ने ब्राह्मण को बुलवाया | ब्राह्मण ने झूठ-भरी बातें कह दी | झूठ आखिर कब त्क छूपा रहता | वह झूठ जो सामाजिक अन्याय का प्रतीक था | वह भी एक नारी के खिलाफ | ऐसी नारी जो दलित समाज में जन्म लेकर कुछ करना चाहती थी | एक ब्राह्मण झूठ बोले यह बुरी बात थी | वैसे भी ब्राह्मण को झाँसी जैसे हिंदू राज्य में दंड़ मिले यह और भी बुरी बात थी | वैसे भी ब्राह्मण को दंड़ देना सामाजिक रूप से अपराध था | एक ब्राह्मण को नाराज करने का अर्थ नगर तथा आसपास के समूचे ब्राह्मण समाज को नाराज करना था | जान बुझकर इस तरह का खतरा रानी मोल लेना नहीं चाहती थी | ब्राह्मण वर्चस्व समाज में रानी की जगह कोई और भी होता तो वह भी वहीं करता | अत: रानी ने ब्राह्मण

---

1. संपा .प्रभाकर श्रोतिय - नया ज्ञानोदय, अंक 2, जुलाई 2005, पृष्ठ क्र .45

को छोड़ दिया | जो एक ऐतिहासिक भूल थी | दोषी ब्राह्मण साफ-साफ वरी हो गया था | पूरन की रानी के पास फिरयाद का इतना फायदा जरूर हुआ कि सच क्या था, यह पता चल गया था | रानी समझती थी कि गाय को मारना समाज में अपराध है | भले ही वह घायल हुई हो | शेष ब्राह्मणों ने रानी लक्ष्मीबाई के कान भरें | इससे दो फायदे होंगे सजातीय ब्राह्मण की खोई हुई प्रतिष्ठा भी वापस लौट आएगी और पूरन के परिवार को सजा भी मिल जाएगी | बछिया के घायल होने का दंड़ उन्हें भोगना ही था | शास्त्र यहीं कहते थे | नियम कानून उसी ड़ोर से बँधे थे | जो शास्त्रों में निश्चित था, वही होना था | पूरन के परिवार को पहले गंगा स्नान करना पड़ा | जहाँ घाट पर बैठे पंड़ों ने उन्हें मूँड़ा | वापस लौटकर भोज देना पड़ा | इस प्रकार की यातनाएँ न्याय व्यवस्था के माध्यम से दलितों को सहनी पड़ती थी |

❖ **निष्कर्ष -**

मोहनदास नैमिशराय जी के उपन्यासों का मूल्यांकन करने के पश्चात मेरा विनम्र निष्कर्ष है कि उनके उपन्यासों से दलित शोषण को वाणी मिली है | मोहनदास नैमिशराय जी ने दलितों की समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है | भारत का मुक्तिपर्व आ गया है | लेकिन सवर्ण दलितों को मुक्ति देना नहीं चाहते हैं | दलितों का मुक्तिपर्व कब आएगा | इस बुनियादी स्मस्या को केंद्र में लाया गया है सवर्ण देश आजाद होने पर भी दलितों को गुलाम बनाकर ही रखना चाहते हैं | वे दलितों को हुक्म के तावेदार बनाना चाहते हैं | सवर्णों की गंधी मानसिकता को नैमिशराय जी ने प्रस्तुत किया है |

नैमिशराय जी ने शिक्षा व्यवस्था के समस्याओं पर प्रकाश ड़ाला है | देश आजाद होने पर भी दलितों को शिक्षा लेने से रोका जाता है | सवर्ण अध्यापक दलितों के लड़कों का उपहास करते हैं | उन्हें जाति का नाम लेकर जलील किया जाता है | उनके जख्मों को कुरेदा जाता है | अध्यापक पाण्ड़े सुनीत को मैरिट के आधार पर स्कॉलरशिप फार्म भरने का विरोध करता है | उन्हें शिक्षा के माध्यम से दलितों की प्रगति सुहाती नहीं है | प्राचीन काल से दलितों को मंदिर प्रवेश नकारा गया है | सवर्ण हिंदू मंदिर में पूजा करते हैं और मुसलमान मस्जीद में खुदा को याद करते हैं | दलित किसको याद करें | दलित किनकी पूजा करें | दलित समाज मजवूर था | उनका बोलना

सहन नहीं होता था | बोलने पर उन्हें दंड़ सहन करना पड़ता था | ब्राह्मणों को मंदिर से लाभ ही लाभ थे | यह उनका धार्मिक व्यवसाय था | यह व्यवसाय बारह महिने फलता-फूलता था | धर्म के रक्षक कहनेवाले ब्राह्मणों ने धर्म के नाम पर समाज व्यवस्था को बिगाड़ने का कार्य किया | लेखक ने इस प्रवृत्ति की कटू आलोचना की है |

नैमिशराय जी ने जातीय व्यवस्था पर कड़ी चोट की है | दलितों को प्राकृतिक जल भी नसीब न था | उन्हें नलकी से पानी पिलाया जाता था | दलित समाज के लोग सभी जगह हाशिये पर थे | इस कारण सामाजिक समता की कोई संभावना नहीं है | भारतीय समाज में सवर्ण जातियों के लोगों के पास सुनाने के विशेषाधिकार थे | दलित समाज को सुनना पड़ता था | लोगों की पहचान जाति, कुल, गोत्र से ही होती थी | हिंदू धर्म में दलितों को जातीयता विरासत में मिली थी | सवर्ण दलितों की जातीय अस्मिता और पहचान पर प्रहार करते थे | तथाकथित श्रेष्ठ जाति के लोग उनकी परछाई से भी दूर रहते थे | दलितों को मुख्य मार्ग पर चलने की मनाही थी | उन्हें देखना भी वे अपशकुन मानते थे | उन्होंने हिंदू धर्म की न्याय व्यवस्था की कठोर आलोचना की है | हिंदू धर्मग्रंथों में दलितों को शिक्षा देने की व्यवस्था नहीं थी | दलितों को दंड़ देने की भी कोई सीमा नहीं थी | दलित जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता के शिकार थे | उनके लिए हिंदू धर्म में न्याय की नहीं, बल्कि अन्याय की व्यवस्था थी | उन्हें सामाजिक अधिकारों एवं न्याय से दूर रखा गया था |

आजादी के बाद दलित समस्या व्यापक रूप धारण कर चुकी है | वह कम होने की अपेक्षा अधिक तीव्र दिखाई देती है | मोहनदास नैमिशराय जी के उपन्यासों में दलित जीवन की विवशता अधिक दृष्टिगोचर होती है | नैमिशराय जी ने दलितों की समस्याओं को प्रस्तुत करना अपना कर्तव्य समझकर अपनी लेखनी को मुक्त किया है | परिणाम स्वरूप उनके उपन्यासों में दलितों का यथार्थ चित्रण हुआ है |